माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयो के व्यक्तित्व कारक का तुलानात्मक अध्ययन प्रयागराज जनपद के विशेष सन्दर्भ में

समर बहादुर यादव

रिसर्च स्कॉलर

मेजर एस डी सिंह विश्वविद्यालय, फर्रुखाबाद, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

Email id-sb.samar2019@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन: प्रयागराज जनपद के विशेष संदर्भ में" का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के प्रमुख आयामों जैसे बहिर्मुखता, आत्मविश्वास, भावनात्मक स्थिरता एवं सामाजिक अनुकूलन का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक शैक्षिक परिदृश्य में विद्यार्थियों का व्यक्तित्व विकास केवल शैक्षणिक उपलब्धि तक सीमित न रहकर उनके सामाजिक, भावनात्मक एवं व्यवहारिक विकास का भी आधार बन गया है। इस संदर्भ में यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि विद्यालय प्रकार (सरकारी एवं निजी) तथा लिंग के आधार पर व्यक्तित्व कारकों में किस प्रकार के अंतर पाए जाते हैं।

अध्ययन में प्रयागराज जनपद के 240 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया, जिन्हें स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि के माध्यम से चयनित किया गया। शोध के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि अपनाई गई तथा आँकड़ों के संग्रहण हेतु मानकीकृत व्यक्तित्व मापन स्केल का उपयोग किया गया। संकलित आँकड़ों का विश्लेषण माध्य (Mean), मानक विचलन (SD) एवं t-परीक्षण (t-test) के माध्यम से किया गया, जिससे विभिन्न समूहों के मध्य अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता का परीक्षण किया जा सके।

अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में बहिर्मुखता एवं आत्मविश्वास का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया, जो संभवतः बेहतर संसाधनों, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों एवं अभिव्यक्ति के अवसरों के कारण है। वहीं, सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में भावनात्मक स्थिरता अपेक्षाकृत अधिक देखी गई, जो उनके अनुकूलनशीलता एवं जीवन परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता को दर्शाती है। लिंग के आधार पर विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि बालकों में आत्मविश्वास का स्तर थोड़ा अधिक है, जबकि बालिकाओं में सामाजिक अनुकूलन की क्षमता अधिक विकसित पाई गई।

सांख्यिकीय विश्लेषण ($t\text{-value} = 5.32$, $p < 0.05$) से यह सिद्ध हुआ कि विभिन्न समूहों के मध्य पाए गए अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण हैं। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि विद्यालय प्रकार एवं लिंग जैसे कारक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। अतः यह आवश्यक है कि विद्यालयों में संतुलित एवं समावेशी वातावरण, व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम, परामर्श सेवाएँ एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाए, ताकि विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व का विकास सुनिश्चित किया जा सके।

कुंजी शब्द: व्यक्तित्व कारक, बहिर्मुखता, आत्मविश्वास, भावनात्मक स्थिरता

परिचय

व्यक्तित्व मानव व्यवहार, विचार एवं भावनाओं का समग्र स्वरूप है, जो व्यक्ति की विशिष्ट पहचान को निर्धारित करता है। यह केवल जन्मजात गुणों का परिणाम नहीं है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक परिवेश के निरंतर प्रभाव से विकसित होने वाली एक गतिशील प्रक्रिया है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर, जब विद्यार्थी किशोरावस्था के चरण से गुजरते हैं, तब उनके व्यक्तित्व का निर्माण तीव्र गति से होता है और यही अवस्था उनके भविष्य के शैक्षणिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन की आधारशिला रखती है।

विद्यालय इस प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जहाँ विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों, सह-पाठ्यक्रम कार्यक्रमों एवं सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास होता है। तथापि, सभी विद्यालयों में उपलब्ध संसाधनों, शिक्षण विधियों एवं वातावरण में अंतर होने के कारण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में भी विविधता देखी जाती है। निजी विद्यालयों में जहाँ आधुनिक संसाधन, तकनीकी सुविधाएँ एवं अभिव्यक्ति के अवसर अधिक होते हैं, वहीं सरकारी विद्यालयों में सीमित संसाधनों के बावजूद विद्यार्थियों में अनुकूलन क्षमता एवं भावनात्मक स्थिरता का विकास देखा जाता है।

इसके अतिरिक्त, लिंग के आधार पर भी व्यक्तित्व कारकों में भिन्नताएँ पाई जाती हैं। सामाजिक अपेक्षाएँ, सांस्कृतिक मान्यताएँ एवं पारिवारिक वातावरण बालकों एवं बालिकाओं के व्यवहार एवं व्यक्तित्व निर्माण को अलग-अलग रूप में प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, बालकों में आत्मविश्वास एवं स्वतंत्रता की भावना अधिक विकसित हो सकती है, जबकि बालिकाओं में सामाजिक अनुकूलन एवं संवेदनशीलता की प्रवृत्ति अधिक देखी जाती है।

इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अध्ययन प्रयागराज जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक विश्लेषण करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन न केवल विद्यालय प्रकार एवं लिंग के आधार पर व्यक्तित्व में पाए जाने वाले अंतरों को स्पष्ट करता है, बल्कि यह भी संकेत करता है कि विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए संतुलित, सहयोगात्मक एवं अवसर-संपन्न शैक्षिक वातावरण का निर्माण अत्यंत आवश्यक है।

अध्ययन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

प्रस्तुत अध्ययन विभिन्न प्रमुख व्यक्तित्व एवं अधिगम सिद्धांतों पर आधारित है, जो यह स्पष्ट करते हैं कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारक जैसे बहिर्मुखता, आत्मविश्वास, भावनात्मक स्थिरता एवं सामाजिक अनुकूलन किस प्रकार विकसित होते हैं और किन कारकों से प्रभावित होते हैं। इन सिद्धांतों का समन्वित विश्लेषण यह दर्शाता है कि व्यक्तित्व एक बहुआयामी एवं गतिशील संरचना है, जो व्यक्ति के आंतरिक गुणों एवं बाह्य वातावरण के पारस्परिक प्रभाव से निर्मित होती है।

प्रथम, Gordon Allport (1937) के व्यक्तित्व गुण सिद्धांत के अनुसार व्यक्तित्व विभिन्न स्थायी गुणों (traits) का समुच्चय है, जो व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित करते हैं। इस सिद्धांत के आधार पर बहिर्मुखता, आत्मविश्वास एवं भावनात्मक स्थिरता जैसे गुण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व की पहचान एवं उनके व्यवहार के स्वरूप को निर्धारित करते हैं।

द्वितीय, Paul Costa एवं Robert McCrae (1992) द्वारा प्रतिपादित बिग फाइव पर्सनैलिटी मॉडल व्यक्तित्व के पाँच प्रमुख आयामों- बहिर्मुखता (Extraversion), सहमतता (Agreeableness), सजगता (Conscientiousness), भावनात्मक स्थिरता (Neuroticism का विपरीत) एवं अनुभव के प्रति खुलापन (Openness) को रेखांकित करता है। यह मॉडल विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के वैज्ञानिक मापन एवं तुलनात्मक अध्ययन के लिए एक सुदृढ़ आधार प्रदान करता है।

तृतीय, Albert Bandura (1977) का सामाजिक अधिगम सिद्धांत यह प्रतिपादित करता है कि व्यक्ति अपने सामाजिक परिवेश से अवलोकन एवं अनुकरण के माध्यम से व्यवहार सीखता है। विद्यालय का वातावरण, शिक्षक का व्यवहार, सहपाठियों के साथ अंतःक्रिया तथा उपलब्ध अवसर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करते हैं, जिससे बहिर्मुखता एवं आत्मविश्वास जैसे गुण विकसित होते हैं।

चतुर्थ, Sigmund Freud के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत के अनुसार व्यक्तित्व का विकास व्यक्ति की अवचेतन मानसिक प्रक्रियाओं एवं प्रारंभिक अनुभवों से प्रभावित होता है। यह सिद्धांत यह समझने में सहायक है कि भावनात्मक स्थिरता एवं व्यवहारिक प्रतिक्रियाएँ किस प्रकार आंतरिक मानसिक संरचनाओं से संचालित होती हैं।

इस प्रकार, उपर्युक्त सिद्धांतों का समन्वय यह स्पष्ट करता है कि विद्यार्थियों का व्यक्तित्व विकास एक जटिल प्रक्रिया है, जो व्यक्तिगत गुणों, सामाजिक परिवेश एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के सम्मिलित प्रभाव से निर्मित होती है। अतः प्रस्तुत अध्ययन इन सिद्धांतों के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत अध्ययन का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों जैसे बहिर्मुखता, आत्मविश्वास, भावनात्मक स्थिरता एवं सामाजिक अनुकूलन का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जो उनके समग्र विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल शैक्षणिक उपलब्धि तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, सामाजिक दक्षता एवं भावनात्मक संतुलन को भी समान रूप से महत्व दिया जा रहा है। इस दृष्टि से यह अध्ययन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण को समझने में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

शैक्षणिक दृष्टिकोण से यह अध्ययन महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह विद्यालय प्रकार (सरकारी एवं निजी) के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में पाए जाने वाले अंतर को स्पष्ट करता है। इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि विभिन्न शैक्षणिक वातावरण एवं संसाधन किस प्रकार विद्यार्थियों के व्यवहार एवं आत्मविश्वास को प्रभावित करते हैं। यह जानकारी शिक्षकों एवं विद्यालय प्रशासकों को अधिक प्रभावी शिक्षण रणनीतियाँ विकसित करने में सहायक हो सकती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह अध्ययन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों की गहन समझ प्रदान करता है। यह दर्शाता है कि भावनात्मक स्थिरता, सामाजिक अनुकूलन एवं आत्मविश्वास जैसे गुण केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक एवं पर्यावरणीय कारकों से भी प्रभावित होते हैं। इससे विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं को समझने एवं उन्हें संतुलित व्यक्तित्व विकसित करने में सहायता मिलती है।

नीतिगत दृष्टिकोण से भी यह अध्ययन अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि इसके निष्कर्ष शिक्षा नीति-निर्माताओं को यह संकेत देते हैं कि विद्यालयों में केवल पाठ्यक्रम आधारित शिक्षण ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम, परामर्श सेवाएँ एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ भी अनिवार्य हैं। इससे शिक्षा प्रणाली को अधिक समग्र एवं छात्र-केंद्रित बनाया जा सकता है। अंततः, यह अध्ययन सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि संतुलित एवं सकारात्मक व्यक्तित्व वाले विद्यार्थी ही समाज के उत्तरदायी एवं सफल नागरिक बन सकते हैं। अतः विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर ध्यान देना समाज के समग्र विकास के लिए भी आवश्यक है।

समस्या का विवरण

विभिन्न विद्यालयों एवं लिंग के आधार पर व्यक्तित्व कारकों में अंतर पाया जाता है, जिसका तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है।

प्रमुख शब्दों की प्रकार्यात्मक परिभाषा

- **व्यक्तित्व कारक:** व्यवहार को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक गुण
- **बहिर्मुखता:** सामाजिकता एवं सक्रियता
- **भावनात्मक स्थिरता:** तनाव नियंत्रण क्षमता

चर

- **स्वतंत्र चर-** विद्यालय प्रकार (निजी/सरकारी), लिंग (बालिका/बालक)
- **आश्रित चर-** बहिर्मुखता, आत्मविश्वास, भावनात्मक स्थिरता, सामाजिक अनुकूलन

अध्ययन के उद्देश्य

1. व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन
2. विद्यालय प्रकार के आधार पर अंतर ज्ञात करना
3. लिंग के आधार पर अंतर का विश्लेषण

शोध प्रश्न

- क्या विद्यालय प्रकार व्यक्तित्व को प्रभावित करता है?
- क्या लिंग के आधार पर अंतर है?

समस्या का क्षेत्र:

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र प्रयागराज जनपद तक सीमित रखा गया है, जहाँ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

सीमांकन:

इस अध्ययन का सीमांकन इस प्रकार निर्धारित किया गया है कि इसमें कुल 240 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है, जिससे प्राप्त निष्कर्षों को एक विशिष्ट भौगोलिक एवं शैक्षिक संदर्भ में समझा जा सके।

साहित्य समीक्षा

- **Allport (1937):**- Gordon Allport (1937) के अनुसार व्यक्तित्व विभिन्न स्थायी व्यक्तिगत गुणों (traits) का समुच्चय है, जो व्यक्ति के व्यवहार, सोच एवं प्रतिक्रियाओं को निर्धारित करते हैं। उनके सिद्धांत के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक विद्यार्थी का व्यक्तित्व अद्वितीय होता है और यह उसके अंतर्निहित गुणों एवं अनुभवों के संयोजन से निर्मित होता है।
- **Bandura (1977):** Albert Bandura (1977) के सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति का व्यवहार उसके सामाजिक वातावरण से अत्यधिक प्रभावित होता है। विद्यार्थी अपने आसपास के लोगों जैसे शिक्षक, अभिभावक एवं सहपाठी के व्यवहार का अनुकरण करते हैं, जिससे उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों का विकास होता है।
- **Costa & McCrae (1992):** Paul Costa एवं Robert McCrae (1992) द्वारा प्रतिपादित बिग फाइव पर्सनैलिटी मॉडल व्यक्तित्व के पाँच प्रमुख आयामों- बहिर्मुखता, सहमतता, सजगता, भावनात्मक स्थिरता एवं अनुभव के प्रति खुलापन को दर्शाता है। यह मॉडल व्यक्तित्व के वैज्ञानिक अध्ययन एवं तुलनात्मक विश्लेषण के लिए अत्यंत प्रभावी एवं व्यापक रूप से स्वीकृत ढाँचा प्रदान करता है।
- **Sharma (2021):** Sharma (2021) के अध्ययन में यह पाया गया कि विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। सकारात्मक एवं संसाधन-संपन्न विद्यालयों में विद्यार्थियों का आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति क्षमता एवं सामाजिक व्यवहार अधिक विकसित पाया गया, जबकि सीमित संसाधनों वाले विद्यालयों में इन गुणों का स्तर अपेक्षाकृत कम देखा गया।
- **Kumar (2022):** Kumar (2022) के शोध में यह निष्कर्ष निकाला गया कि व्यक्तित्व कारकों में लिंग के आधार पर महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है। अध्ययन के अनुसार बालकों एवं बालिकाओं के बीच आत्मविश्वास, सामाजिक अनुकूलन एवं भावनात्मक प्रतिक्रियाओं में भिन्नताएँ देखी जाती हैं, जो उनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश से प्रभावित होती हैं।

शोध अंतराल

उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व कारकों पर अनेक अध्ययन किए गए हैं, किन्तु प्रयागराज जनपद के संदर्भ में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत अनुपस्थित है। विशेष रूप से विद्यालय प्रकार एवं लिंग के

आधार पर व्यक्तित्व में अंतर को एकीकृत रूप से समझने का प्रयास सीमित रहा है। अतः प्रस्तुत अध्ययन इस शोध अंतराल को भरने का प्रयास करता है।

शोध पद्धति

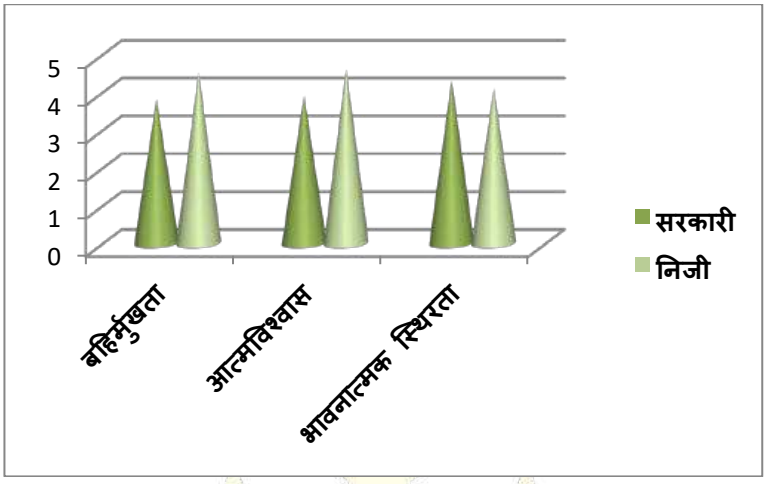
प्रस्तुत अध्ययन में एक व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है, जिसके अंतर्गत शोध डिज़ाइन, जनसंख्या, न्यादर्श चयन, डेटा संग्रहण एवं सांख्यिकीय विश्लेषण को स्पष्ट रूप से निर्धारित किया गया है, ताकि निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय एवं प्रमाणिक हो सकें।

- **शोध डिज़ाइन:** इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण (Descriptive Survey) शोध डिज़ाइन का उपयोग किया गया है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।
- **जनसंख्या:** अध्ययन की जनसंख्या में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी सम्मिलित हैं, जो इस शोध के प्रमुख अध्ययन विषय हैं।
- **न्यादर्श:** इस अध्ययन में कुल 240 विद्यार्थियों को न्यादर्श (Sample) के रूप में चयनित किया गया है, जिससे परिणामों की प्रतिनिधित्व क्षमता सुनिश्चित की जा सके।
- **न्यादर्श विधि:** न्यादर्श के चयन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक (Stratified Random Sampling) विधि का उपयोग किया गया है, जिससे विभिन्न वर्गों (जैसे विद्यालय प्रकार एवं लिंग) का समुचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके।
- **आँकड़ों का स्रोत:** अध्ययन में आँकड़ों का प्रमुख स्रोत प्राथमिक (Primary Data) है, जिसे सीधे विद्यार्थियों से एकत्रित किया गया है, जिससे डेटा की प्रामाणिकता एवं विश्वसनीयता बनी रहती है।
- **शोध उपकरण:** आँकड़ों के संकलन हेतु व्यक्तित्व मापन स्केल का उपयोग किया गया है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों के विभिन्न व्यक्तित्व आयामों का मापन किया गया है।
- **आँकड़ों का संग्रह:** आँकड़ों का संग्रह प्रश्नावली विधि के माध्यम से किया गया है, जिससे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व संबंधी आवश्यक जानकारी व्यवस्थित रूप से प्राप्त की जा सके।
- **सांख्यिकीय विश्लेषण:** संग्रहित आँकड़ों का विश्लेषण करने हेतु माध्य (Mean), मानक विचलन (SD) एवं t-परीक्षण (t-test) का उपयोग किया गया है, जिससे विभिन्न समूहों के मध्य अंतर की दिशा एवं सांख्यिकीय सार्थकता का परीक्षण किया जा सके।

सारणीकरण और व्याख्या

सारणी 1: विद्यालय प्रकार के आधार पर तुलना

कारक	सरकारी	निजी
बहिर्मुखता	3.8	4.5
आत्मविश्वास	3.9	4.6
भावनात्मक स्थिरता	4.3	4.1



व्याख्या

सारणी 1 में प्रस्तुत आँकड़े दर्शाते हैं कि विद्यालय प्रकार के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों में स्पष्ट अंतर पाया गया है। निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में बहिर्मुखता का माध्य 4.5 है, जबकि सरकारी विद्यालयों में यह 3.8 है। इसी प्रकार आत्मविश्वास का माध्य निजी विद्यालयों में 4.6 तथा सरकारी विद्यालयों में 3.9 पाया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालयों के विद्यार्थी सामाजिक अभिव्यक्ति, संवाद क्षमता, मंचीय गतिविधियों एवं आत्मविश्वास के स्तर पर अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय दिखाई देते हैं। इस अंतर का प्रमुख कारण निजी विद्यालयों में उपलब्ध अधिक शैक्षणिक संसाधन, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, प्रस्तुतीकरण के अवसर, प्रतियोगिताएँ, संवाद-आधारित शिक्षण एवं व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम हो सकते हैं। ऐसे वातावरण में विद्यार्थी अपने विचारों को व्यक्त करने, समूह गतिविधियों में भाग लेने तथा नेतृत्व क्षमता विकसित करने के अधिक अवसर प्राप्त करते हैं, जिससे उनकी बहिर्मुखता एवं आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। दूसरी ओर, भावनात्मक स्थिरता का माध्य सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में 4.3 तथा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में 4.1 पाया गया है। यह संकेत करता है कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी विभिन्न सामाजिक एवं जीवन परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करने में अपेक्षाकृत अधिक सक्षम हो सकते हैं। सीमित संसाधनों एवं विविध सामाजिक पृष्ठभूमि के अनुभवों के कारण उनमें धैर्य, सहनशीलता एवं भावनात्मक नियंत्रण की क्षमता विकसित हो सकती है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि निजी विद्यालयों का वातावरण बहिर्मुखता एवं आत्मविश्वास जैसे व्यक्तित्व कारकों को प्रोत्साहित करता है, जबकि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में भावनात्मक स्थिरता अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। इसलिए दोनों प्रकार के विद्यालयों में व्यक्तित्व विकास के संतुलित कार्यक्रमों की आवश्यकता है, ताकि विद्यार्थियों के सभी व्यक्तित्व आयामों का समुचित विकास हो सके।

सारणी 2: लिंग आधारित तुलना

कारक	बालक	बालिका
आत्मविश्वास	4.4	4.2
सामाजिक अनुकूलन	4.1	4.5

व्याख्या

सारणी 2 में प्रस्तुत आँकड़े यह दर्शाते हैं कि लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों में कुछ महत्वपूर्ण अंतर पाए जाते हैं। आत्मविश्वास के संदर्भ में बालकों का माध्य 4.4 है, जबकि बालिकाओं का माध्य 4.2 पाया गया है। यह संकेत करता है कि बालकों में आत्म-अभिव्यक्ति, निर्णय लेने की क्षमता एवं आत्मविश्वास का स्तर अपेक्षाकृत अधिक हो सकता है। इसका कारण सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में बालकों को अधिक स्वतंत्रता, प्रोत्साहन एवं नेतृत्व के अवसर मिलना हो सकता है, जिससे उनमें आत्मविश्वास का विकास अधिक होता है। दूसरी ओर, सामाजिक अनुकूलन के संदर्भ में बालिकाओं का माध्य 4.5 है, जो बालकों के 4.1 की तुलना में अधिक है। यह दर्शाता है कि बालिकाएँ सामाजिक परिस्थितियों के साथ बेहतर सामंजस्य स्थापित करने में अधिक सक्षम होती हैं। वे समूह में कार्य करने, सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करने एवं संबंधों को

बनाए रखने में अधिक कुशल होती हैं, जो उनके उच्च सामाजिक अनुकूलन स्तर को दर्शाता है। यह अंतर इस तथ्य को भी इंगित करता है कि बालक एवं बालिकाएँ सामाजिकरण (socialization) की भिन्न प्रक्रियाओं से गुजरते हैं, जो उनके व्यक्तित्व विकास को अलग-अलग रूप में प्रभावित करती हैं। जहाँ बालकों को आत्मनिर्भरता एवं प्रतिस्पर्धात्मकता की ओर अधिक प्रोत्साहित किया जाता है, वहीं बालिकाओं को सहयोग, संवेदनशीलता एवं सामाजिक संतुलन की ओर प्रेरित किया जाता है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि लिंग के आधार पर व्यक्तित्व कारकों में स्पष्ट अंतर विद्यमान है, जिसमें बालकों में आत्मविश्वास अपेक्षाकृत अधिक तथा बालिकाओं में सामाजिक अनुकूलन बेहतर पाया जाता है। इसलिए शिक्षा प्रणाली में ऐसे कार्यक्रमों की आवश्यकता है, जो दोनों लिंगों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सभी आयामों के संतुलित विकास को प्रोत्साहित करें।

सारणी 3: समग्र व्यक्तित्व स्कोर

समूह	माध्य
उच्च	4.6
मध्यम	3.8
निम्न	3.1

व्याख्या

सारणी 3 में प्रस्तुत समग्र व्यक्तित्व स्कोर यह दर्शाते हैं कि विद्यार्थियों को उनके व्यक्तित्व विकास के स्तर के आधार पर तीन समूहों- उच्च, मध्यम एवं निम्न में वर्गीकृत किया गया है। उच्च समूह का माध्य 4.6 है, जो यह संकेत करता है कि इस वर्ग के विद्यार्थियों में बहिर्मुखता, आत्मविश्वास, भावनात्मक स्थिरता एवं सामाजिक अनुकूलन जैसे व्यक्तित्व कारक अत्यंत विकसित हैं। ऐसे विद्यार्थी न केवल शैक्षणिक गतिविधियों में सक्रिय होते हैं, बल्कि सामाजिक परिस्थितियों में भी आत्मविश्वास के साथ अपनी भूमिका निभाते हैं। मध्यम समूह का माध्य 3.8 पाया गया है, जो यह दर्शाता है कि इस वर्ग के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व विकास का स्तर संतोषजनक है, किन्तु इसमें और सुधार की संभावनाएँ विद्यमान हैं। ये विद्यार्थी सामान्य परिस्थितियों में अनुकूलन कर लेते हैं, परंतु कुछ स्थितियों में उन्हें मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं अवसरों की आवश्यकता होती है, जिससे उनका व्यक्तित्व और अधिक सुदृढ़ हो सके। निम्न समूह का माध्य 3.1 यह संकेत करता है कि इस वर्ग के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम अपेक्षाकृत कम विकसित हैं। ऐसे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की कमी, सामाजिक संकोच, भावनात्मक अस्थिरता अथवा अनुकूलन में कठिनाई जैसी समस्याएँ देखी जा सकती हैं। इन विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से परामर्श, प्रेरणा एवं व्यक्तित्व विकास कार्यक्रमों की आवश्यकता होती है, ताकि उनके आत्मबल एवं सामाजिक दक्षता को बढ़ाया जा सके। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का स्तर विविधता लिए हुए है, और प्रत्येक समूह के लिए उपयुक्त शैक्षणिक एवं मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप आवश्यक हैं, जिससे सभी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का संतुलित एवं समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके।

परिकल्पना परीक्षण

प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न समूहों जैसे विद्यालय प्रकार एवं लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों में अंतर की जाँच हेतु t-परीक्षण का उपयोग किया गया। विश्लेषण के परिणामस्वरूप t-value = 5.32 प्राप्त हुई, जिसका p-मूल्य 0.05 से कम ($p < 0.05$) पाया गया। यह परिणाम सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है, क्योंकि जब p-मूल्य निर्धारित स्तर (0.05) से कम होता है, तो यह संकेत करता है कि प्राप्त अंतर केवल संयोगवश नहीं है, बल्कि वास्तविक एवं सार्थक है। अतः इस स्थिति में शून्य परिकल्पना (कि समूहों के मध्य कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है) को अस्वीकृत किया जाता है तथा वैकल्पिक परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है। इस प्रकार, यह निष्कर्ष स्पष्ट रूप से सामने आता है कि विद्यालय प्रकार एवं लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों में महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है। इसका तात्पर्य यह है कि शैक्षणिक वातावरण, सामाजिक परिस्थितियाँ एवं लिंग-आधारित अनुभव विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को प्रभावशाली ढंग से प्रभावित करते हैं। अतः यह कहा जा सकता है

कि व्यक्तित्व विकास एक समान प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह विभिन्न बाह्य एवं आंतरिक कारकों से प्रभावित होता है, और इन कारकों को ध्यान में रखते हुए शैक्षणिक एवं मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेपों की योजना बनाना आवश्यक है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पना परीक्षण के आधार पर यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विभिन्न समूहों विशेषकर विद्यालय प्रकार (सरकारी एवं निजी) तथा लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व कारकों में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया है। यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है, जो यह संकेत करता है कि व्यक्तित्व विकास एक समान प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों से प्रभावित होता है। निजी एवं सरकारी विद्यालयों के वातावरण, संसाधनों, शिक्षण पद्धतियों एवं अवसरों में अंतर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों जैसे बहिर्मुखता, आत्मविश्वास एवं भावनात्मक स्थिरता को अलग-अलग रूप में प्रभावित करता है। इसी प्रकार, लिंग के आधार पर सामाजिक अपेक्षाएँ एवं अनुभव भी विद्यार्थियों के व्यवहार एवं व्यक्तित्व विकास में भिन्नता उत्पन्न करते हैं। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विद्यालय वातावरण एवं लिंग जैसे कारक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए शिक्षा प्रणाली में ऐसे समावेशी एवं संतुलित कार्यक्रमों की आवश्यकता है, जो सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करते हुए उनके व्यक्तित्व के सभी आयामों के समुचित विकास को सुनिश्चित कर सकें।

अध्ययन के निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया है। इसका प्रमुख कारण यह हो सकता है कि निजी विद्यालयों में विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति, प्रस्तुतीकरण, प्रतियोगिताओं एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं, जिससे उनमें आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता एवं सार्वजनिक संवाद कौशल का विकास होता है। इसके विपरीत, सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में भावनात्मक स्थिरता का स्तर अधिक पाया गया है। यह दर्शाता है कि ये विद्यार्थी विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के साथ बेहतर अनुकूलन करने में सक्षम होते हैं। सीमित संसाधनों एवं विविध जीवन अनुभवों के कारण उनमें धैर्य, सहनशीलता एवं भावनात्मक नियंत्रण की क्षमता विकसित होती है, जो उनके व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि बालिकाओं में सामाजिक अनुकूलन की क्षमता बालकों की तुलना में अधिक विकसित है। बालिकाएँ समूह में कार्य करने, सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करने एवं सामाजिक संबंधों को बनाए रखने में अधिक कुशल होती हैं। यह प्रवृत्ति उनके संवेदनशील एवं समन्वयात्मक व्यवहार को दर्शाती है, जो उनके व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अनुशंसाएँ

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह अनुशंसा की जाती है कि विद्यालयों में नियमित रूप से व्यक्तित्व विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए, जिनके माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, बहिर्मुखता, नेतृत्व क्षमता एवं सामाजिक कौशल का विकास किया जा सके। इन कार्यक्रमों में वाद-विवाद, भाषण, समूह चर्चा, नाट्य गतिविधियाँ एवं नेतृत्व प्रशिक्षण जैसी गतिविधियों को शामिल किया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को संतुलित रूप से विकसित किया जा सके।

इसके अतिरिक्त, विद्यालयों में प्रभावी परामर्श सेवाओं (Counseling Services) की व्यवस्था करना अत्यंत आवश्यक है। प्रशिक्षित परामर्शदाता विद्यार्थियों की भावनात्मक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं को समझकर उन्हें उचित मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। इससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, भावनात्मक स्थिरता एवं आत्म-नियंत्रण की भावना विकसित होती है, जो उनके समग्र विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अंततः, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए। खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, कला, संगीत, सामाजिक सेवा एवं क्लब गतिविधियाँ विद्यार्थियों को अपनी रुचियों को विकसित करने, समूह में कार्य करने तथा सामाजिक अनुकूलन की क्षमता बढ़ाने का

अवसर प्रदान करती हैं। इस प्रकार की गतिविधियाँ न केवल विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को सुदृढ़ करती हैं, बल्कि उन्हें एक संतुलित एवं आत्मविश्वासी नागरिक बनने में भी सहायक होती हैं।

संदर्भ

- गॉर्डन ऑलपोर्ट। (1937). *व्यक्तित्व: एक मनोवैज्ञानिक व्याख्या*। न्यूयॉर्क: होल्ट, राइनहार्ट एंड विंस्टन।
- अल्बर्ट बंडूरा। (1977). *सामाजिक अधिगम सिद्धांत*। एंगलवुड क्लिफ्स, एनजे: प्रेन्टिस हॉल।
- पॉल कोस्टा एवं रॉबर्ट मैकक्रे। (1992). *संशोधित एनईओ व्यक्तित्व सूची (एनईओ-पीआई-आर) एवं एनईओ पंच-कारक सूची (एनईओ-एफएफआई) व्यावसायिक नियमावली*। ओडेसा, एफएल: मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन संसाधन।
- शर्मा, आर. (2021). *विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर विद्यालय के वातावरण का प्रभाव*। *अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक अध्ययन पत्रिका*, 9(2), 55–62।
- कुमार, एस. (2022). *माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व लक्षणों में लैंगिक अंतर*। *शैक्षिक मनोविज्ञान पत्रिका*, 11(1), 25–33।

IJRMP ESTD 2013 ISSN: 2320-0901